International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 259-264

पर्यावरण भूगोल का मानव जीवन मे महत्व

जय कृष्ण शर्मा*

सार

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है पर्यावरण परि का अर्थ है चारों तरफ से और आवरण का अर्थ है ढके हुए इस प्रकार पर्यावरण या वातावरण शब्द का अर्थ हुआ व्यक्ति के आसपास और चारों और जो कुछ भी है वही उसका पर्यावरण कहा जाता है मानव के चारों ओर फैले हुए वातावरण को पर्यावरण वर्दि में माना जाता है मानव जन्म से मृत्यु पर्यंत पर्यावरण में ही रहता है पर्यावरण शब्द द्वारा वह व्यक्ति एवं सामाजिक क्षेत्रों में विकास करता है यदि उसे अच्छा वातावरण नहीं दिया जाए तो वह आदर्श मानव के रूप में स्वस्थ नागरिक नहीं बन सकता! व्यक्ति को चारों ओर से ढकने वाला आवरण ही 'पर्यावरण' कहलाता है! इस के अभाव में सुखद जीवन की असंभव है।

शब्दकोशः *पर्यावरण, वातावरण, सामाजिक क्षेत्र, आदर्श मानव,* जैविक तत्व।

प्रस्तावना

पर्यावरण का अर्थ

पर्यावरण शब्द परि आवरण से मिलकर बना है परी का अर्थ है चारों ओर और आवरण का अर्थ है गिरा हुआ अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से घिरा हुआ जैसे नदी पहाड़ तालाब मैदान पर पौधे जीव जंत मिट्टी आदि सभी हमारे पर्यावरण के घटक हैं !हम सभी इन घटक दैनिक जीवन में भरपूर उपयोग करते हैं अर्थात हम एन घटको पर ही निर्भर हैं !

पर्यावरण की निम्न विद्वानों के अनुसार परिभाषाएं

- जे. एस .क्रॉस के अनुसार– पर्यावरण या वातावरण वह वाक्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है!
- डग्लस एवं हॉलैंड के अनुसार– पर्यावरण वह शब्द है जो समस्त वाक्य शक्तियों प्रभावों और परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है जो जीवधारी के जीवन स्वभाव व्यवहार तथा अभिव्यक्ति विकास तथा प्रोड़ता पर प्रभाव डालता है!
- हर्ष कॉक व्हाट्स के अनुसार– पर्यावरण इन सभी बाहरी दशा और प्रभावों का योग है जो प्राणी के जीवन तथा विकास पर प्रभाव डालता है!
- डॉक्टर डेविस के अनुसार– मनुष्य के संबंध में पर्यावरण से अभिप्राय भूतल पर मानव के चारों ओर फैले उन सभी भौतिक स्वरूप ऐसे हैं जिनके वह निरंतर प्रभावित होते रहते हैं!
- डेडली स्टैंप के अनुसार– पर्यावरण प्रभावों का ऐसा योग है जो किसी जीव के विकास एवं प्रकृति को परिस्थितियों के संपूर्ण तथ्य आपसी सामंजस्य से वातावरण बनाते हैं!

---

* शोध छात्र, भूगोल विभाग, निर्माण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

- एबी सक्सेना के अनुसार– पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जो पर्यावरण के बारे में हमें संचेतना ज्ञान और समझ देती है इसके बारे में अनुकूल दृष्टिकोण का विकास करती है और इसके संरक्षण तथा सुधार की दिशा में हमें प्रतिबंध करती है!
- शिक्षा शास्त्री थॉमसन के अनुसार– पर्यावरण ही शिक्षक है शिक्षा का काम छात्र को उसके अनुकूल बनाना है!
- विश्व शब्दकोश के अनुसार– पर्यावरण उन सभी दिशाओं प्रणालियों तथा प्रभावों का योग है जो जीवो में उनकी प्रजातियों के विकास जीवन एवं मृत्यु को प्रभावित करता है!
- जर्मन वैज्ञानिक फिटिंग के अनुसार– पर्यावरण जीवो के पर्वतीय कारकों का योग है जिसमें जीवन की परिस्थितियों के संपूर्ण तथ्य आपसी संबंध से वातावरण बनाते हैं!
- निकोलस के अनुसार–पर्यावरण उन समस्त बाहरी दशाओं तथा प्रभावों का योग है जो प्राणी के जीवन विकास पर प्रभाव डालते हैं!

उपर्युक्त परिभाषा ओं के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि जो कुछ भी हमारे चारों ओर विद्वान है तथा यह हमारी रहन–सहन दशाओं तथा मानसिक क्षमताओं को प्रभावित करता है पर्यावरण कहलाता है पर्यावरण में वे सभी परिस्थितियां भी आती हैं जो हमारे जीवन पर प्रभाव डालती हैं हमारा घर मोहल्ला गांव शहर सभी हमारे पर्यावरण के अंग हैं क्योंकि वे सभी हमारे जीवन पर प्रभाव डालते हैं !श्पर्यावरणश मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मंर समाविष्ट है!

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है यह उन संपूर्ण शक्तियों परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है जो मानव को प्रभावित करती है तथा उनके क्रियाकलापों को अनुशासित करती है!

पर्यावरण के प्रकार

संसार में पर्यावरण को प्रायरू तीन प्रकार का माना जाता है और पर्यावरण के इन सभी रूपों को एक दूसरे का पूरक माना जाता है–

- **प्राकृतिक पर्यावरण–** हमारी पृथ्वी पर बहुत सी ऐसी वस्तुएं उपलब्ध हैं जो कि प्राकृतिक हैं प्राकृतिक का अर्थ होता है प्रकृति के द्वारा निर्मित अर्थ अर्थ प्रकृति के द्वारा जितनी भी वस्तु है जैसे नदी तालाब पेड़ महासागर पहाड़ पत्थर आदि निर्मित किए हुए हैं वह हमारा प्राकृतिक पर्यावरण है प्राकृतिक पर्यावरण के अंतर्गत उन सभी जैविक एवं जैविक तत्वों को शामिल किया जाता है जो कि पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप में पाए जाते हैं जैविक तत्व में पौधे जीव जंतु आदि शामिल है तथा अजैविक तत्वों में वायु ऊर्जा प्राकृतिक गैस आदि तत्व पाए जाते हैं! यह सभी जैविक एवं जैविक तत्व मिलकर जिस पर्यावरण का निर्माण करते हैं वह प्राकृतिक पर्यावरण कहलाता है
- **मानव निर्मित पर्यावरण–** मानव के द्वारा निर्मित पर्यावरण को मानव निर्मित पर्यावरण कहा जाता है मानव निर्मित पर्यावरण में वह सभी वस्तुएं स्थान आदि शामिल है जो मानव से इस धरती पर आने के बाद बनाएं मानव निर्मित पर्यावरण में आने वाले तत्व है सड़कें गाड़ियां पुल के शहर आदि ! विश्व में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है जिसके कारण विश्व भर में आर्थिक विकास की गति तेजी से बढ़ रही है जिस कारण से मानव निर्मित पर्यावरण का क्षेत्र भी तेजी से बढ़ रहा है!
- **सामाजिक पर्यावरण–** हमारे आसपास कई प्रकार के लोग रहते हैं जो कि हमारे वह उनके द्वारा बनाए गए समाज का निर्माण करते हैं इस समाज की सफलता और विफलता दोनों पक्षों की समान भागीदारी पर निर्भर करती है हमारे द्वारा अपने आसपास बनाए गए सामाजिक आवरण को ही सामाजिक पर्यावरण कहा जाता है!

पर्यावरण का महत्व

पर्यावरण जीवन स्त्रोत है जो अनादि काल से पृथ्वी पर मानव एवं संपूर्ण जीवन जगत को न केवल परिचय देता है अपितु उसे विकास के प्रारंभिक काल से वर्तमान तक अस्तित्व में बनाए रखने का आधार रहा है भविष्य का जीवन भी इसी पर निर्भर करता है वायु जल मृदा जीव जंतु तथा वनस्पति पर्यावरणीय मूल घटक हैं जिनकी पारस्परिक क्रिया प्रतिक्रिया से संपूर्ण जय मंडल परिचालित होता है जय मंडल में जीवन का उद्भव विकास एवं विलुप्त होना तथा इस तथ्य पर निर्भर करता है कि प्रकृति अथवा प्राकृतिक वातावरण के साथ उनका कितना समन्वय एवं सामंजस्य है।

कोई भी जी सर बताए कल या विलग तक जीवन व्यतीत नहीं करता पृथ्वी पर विविध जी इतनी अधिक संख्या में है कि किसी भी स्थान पर निवास करने वाले किसी भी जीव का दूसरे अनेक जीवो के साथ सहवास एक होना एक अनिवार्यता होती है इस प्रकार के सहवास ओं का जीव के अस्तित्व के प्रकार के दिशा पर गंभीर प्रभाव पड़ता है इस दृष्टि से भौतिक पर्यावरण का भी बहुत महत्व होता है क्योंकि जीव की अधिकांश ऊर्जा अपने पर्यावरण के भौतिक स्थितियों के प्रति अनुकूल होने से ही वह होती है इस प्रकार पर्यावरण तथा जीव एक दूसरे से जुड़े हुए हैं पर्यावरण से पृथक किसी जीव की कल्पना करना भी असंभव है!

मानव पर्यावरण संबंध

मानव की प्रकृति या पर्यावरण के साथ दो तरफा भूमिका होती है अर्थात मनुष्य एक तरफ तो भौतिक पर्यावरण के जैविक संगठन का एक महत्वपूर्ण भाग तथा घटक है तो दूसरी तरफ व पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण कारक भी है इस तरह मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण तंत्र को विभिन्न हैसियत से विभिन्न रूपों में प्रभावित करता है जैसे जीवित या भौतिक मनुष्य के रूप में सामाजिक मनुष्य के रूप में आरती मनुष्य के रूप में तथा प्रौद्योगिकी मानव के रूप में!

मनुष्य के सभी प्राकृतिक गुण जैसे जन रति स्वस्थ मृत्यु आदि प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा ही उसी तरह प्रभावित है नियंत्रित होती है जैसे कि पर्यावरण के अन्य जीवो के प्राकृतिक गुण प्रभावित तथा नियंत्रित होते हैं परंतु क्योंकि मानव अन्य प्राणियों की तुलना में शारीरिक एवं मानसिक स्तरों पर प्रौद्योगिकी स्तर पर भी सर्वाधिक विकसित प्राणी है अतः वह प्राकृतिक पर्यावरण को बड़े स्तर पर परिवर्तित करके अपने अनुकूल बनाने में समर्थ भी है प्रारंभ में आदिमानव की भौतिक पर्यावरण की कार्यात्मक ता में भूमिका दो तरह की होती थी पता तथा दाता अर्थात मनुष्य भौतिक पर्यावरण से अन्य जीवन के समान साधन प्राप्त करता है तथा पर्यावरण साधनों में अपना योगदान भी करता है दाता देने वाले की भूमिका फलों के बीजों को अनजाने में वकील कर/

पर्यावरण की विशेषताएं

- पर्यावरण का निर्माण जैविक और अजैविक तत्वों से मिलकर होता है!
- जीवा के चारों ओर की वस्तुएं पर्यावरण का निर्माण!
- पर्यावरण सदैव परिवर्तनशील है इसकी परिवर्तनशील ता का प्रमुख कारण सूर्य से प्राप्त उर्जा हैस
- पर्यावरण के प्रति जीवो में अनुकूलता पाई जाती हैस.
- पर्यावरण स्वय पोषण विश्व अन्य नियंत्रण पर आधारित हैस
- पर्यावरण के अंतर्गत विशिष्ट भौतिक क्रिया में कार्यरत होती हैंस
- पर्यावरण में जैव जगत का निवास पाया जाता हैस.
- पर्यावरण की जीवो में परस्पर सहवास अनिवार्य लक्षण हैस
- पर्यावरण संसाधनों का भंडार है।
- पर्यावरण का प्रभाव दृश्य और अदृश्य दोनों रूपों में पर लक्षित होता हैस

पर्यावरण से अनुकूलन Adaptation with Environment

पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन से अथवा दूसरे पर्यावरण में अपने को उसके अनुसार बदल लेना उपयोजन या अनुकूलन कहलाता है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण के परिवर्तनों का सामना करने के लिए शरीर में जो प्राकृतिक संशोधन होता है उसे ही समायोजन कहा जाता है। उदाहरण के लिए, अधिक गर्मी का सामना करने के लिए शरीर से जो पसीना छूटता है उससे शरीर ताप सहन करने की स्थिति में हो जाता है। मानव बाह्य पर्यावरण की उन परिस्थितियों से, जो उसके कार्यों में बाधा डालती हैं, उपयोजन करने का प्रयास करता और यदि इस कार्य में उसे आशातीत सफलता नहीं मिलती तो वह उसके परिवर्तन करने में लग जाता है। यदि किसी क्षेत्र विशेष में कुछ समय के लिए कृषि कार्य न किया जाए तो अनुकूल परिस्थितियों में वहाँ घास या वनों की उत्पत्ति होना स्वाभाविक होगा। इसलिए मानव को अपने पर्यावरण से उपयोजन करने के लिए निरन्तर क्रियाशील रहना पड़ता है।

डॉ. टेलर के मतानुसार, ''प्रकृति मानव के लिए एक प्रकार की योजना प्रस्तुत करती है। मानव उस योजना को स्वीकार या अस्वीकार कर सकता है। यह योजनाएँ एक प्रकार से सुअवसरों के समान हैं जिन्हें मानव चाहे स्वीकार करे या ठुकरा दे, किन्तु मानव का हित इसी में है कि इन सुअवसरों से लाभ उठाए और अपने आपको पर्यावरण से उपयोजित कर ले''। साधारणतः अनुकूलन के निम्न भेद किए जा सकते हैं

- **भौतिक या शारीरिक अनुकूलन** Physical, Genetic or sometic Adaptation– इस प्रकार का उपयोजन पूरी तरह प्राकृतिक नियमों के अधीन या अनिवार्य रूप से हुआ करता है, मानव की इच्छा अनिच्छा अथवा प्रयत्नों का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। प्राकृतिक दशाएं और शक्तियां मानव पर स्पष्ट रूप से अपना प्रभाव डालती हैं। भूमध्यरेखीय वन प्रदेशों में तेज धूप के कारण मानव का रंग एकदम काला हो जाता है जबकि शीतप्रधान प्रदेशों में पीला या सफेद क्योंकि वहां सूर्य के प्रकाश की कमी रहती है। इसी प्रकार ताजी हवा से मनुष्य को उद्दीपन (stimulation) मिलता है। पहाड़ी भागों के निवासी इसी स्वच्छ वायु के कारण कभी भी फेफड़ों सम्बन्धी मारियों से ग्रसित नहीं रहते।
- **साम्प्रदायिक (सामाजिक) अनुकूलन** Communal Adaptation – जब मानव अपने अन्य साथियों की सहायता से पर्यावरण की प्रतिकूल अवस्थाओं को परिवर्तित करने का प्रयास करता है तो उसे साम्प्रदायिक (मानव समाज द्वारा) अनुकूलन कहा जाता है। इस अनुकूलन के फलस्वरूप प्रत्येक जीवधारी अपने निवासस्थान पर रह सकता है और उससे सम्बन्ध स्थापित कर लेता है।

पर्यावरण के चार स्तरीय क्षेत्र

सम्पूर्ण पर्यावरण चाहे वह भौतिक हो या सांस्कृतिक उसकी समग्रता का प्रभावी स्वरूप आगे वर्णित चार प्रधान अंग या क्षेत्रों में व्याप्त है। निम्न वृहद क्षेत्रों में क्षेत्रीय एवं अन्तक्षेत्रीय स्तर पर पारस्परिक अन्तः क्रियाएं होती रहती हैं। यह वृहद् क्षेत्र या मण्डल निम्न प्रकार से है

- **स्थलमण्डल–** भूतल, उसका स्वरूप, उसके स्वरूप में परिवर्तन लाने वाली आन्तरिक एवं बाह्य या समतल स्थापक शक्तियाँ इनकी गतिशील क्रियाओं का आपसी प्रभाव एवं इन सबका मानव पर विविध प्रकार से प्रभाव इसके अंग और उपांग हैं।
- **वायुमण्डल–** यह बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र विभिन्न प्रकार की हल्की तथा भारी गैसों, धूलकणों, जलवाष्प, आदि का मिश्रण है। इसके अन्तर्गत सौर ताप, तापमान, वायु, आर्द्रता, वायुमण्डल के घटक, आदि पूर्णतः गतिशील एवं विशेष प्रभाव तत्व आते हैं। ये सभी जलवायु के माध्यम से पर्यावरण के शेष तीनों क्षेत्रों को पूर्णतः प्रभावित करते हैं। इनकी अन्तः क्रियाएं परस्पर व्यापी एवं एक–दूसरे की पूरक होती इन सबका अब तक मानव पर प्रभाव सार्वभौमिक माना जाता रहा है।
- **जलमण्डल–** यह पर्यावरण का अप्रत्यक्ष किन्तु सर्वव्यापी व गुप्त प्रभावी एवं विशिष्ट क्षेत्र है। इसमें महासागर एवं अन्य जलसंस्थान, महासागर नितल व तल के जमाव, महासागरीय जल की गतियांधाराएँ,

ज्वारभाटा, लहरें, महासागरों के तापमान, लवणता, एवं प्रवाल जीव उनमें से प्रत्येक का प्रभाव, आदि आते हैं। जल स्वयं गतिशील एवं अन्तः प्रभावी बना रहता है । इन्हीं के माध्यम से वाष्पीकरण तथा उसके फलस्वरूप वायु में नमी व संघनन होकर वर्षा होती है। अतः इन सब का जीवों के विकास एवं अजैव पृथ्वी के धरातल निर्माण, उसमें परिवर्तन एवं गतियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पृथ्वी पर जल ही जीवन का आधार (Basis of Life) है।

- **जैवमण्डल–** यह पर्यावरण का महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि उपर्युक्त तीनों क्षेत्रों का जिस प्रकार का अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा जीवों का विकास भी उष्ण, अद्घोष्ण, शीतोष्ण व शीत जलवायु में विविध भूतल एवं जल उपलब्धता के अनुसार अवस्थान (Habitat) निर्धारित होगा एवं उसी के अनुसार जैव प्रकार या बायोमी (Biome) विकसित होगा। मानव भी ऐसे प्रभाव एवं उनकी क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं से पूर्णतः प्रभावित होता है। सम्पूर्ण वनस्पति व जन्तुजगत एवं मानव इसमें आते हैं।

पर्यावरण भूगोल (अंग्रेजी: Environmental Geography) पर्यावरणीय दशाओं, उनकी कार्यशीलता और तकनीकी रूप से सबल आर्थिक मानव और पर्यावरण के बीच संबंधों का अध्ययन स्थानिक तथा कालिक (spatio&temporal) सन्दर्भों में करता है। ख्1, पर्यावरण भूगोल भूगोल की शाखाओं में से एक है, यह मानव और प्राकृतिक प्रणालियों के बीच संबंधों का अध्ययन करता है। भूगोल कि यह शाखा एक प्रकार से भौतिक भूगोल और मानव भूगोल के विभाजन और बढ़ती दूरियों को कम करने का कार्य करती है। भूगोल सदैव ही मानव और उसके पर्यावरण का अध्ययन स्थान के सन्दर्भों में करता रहा है । भूगोल सदैव ही मानव और उसके पर्यावरण का अध्ययन स्थान के सन्दर्भों में करता रहा है लेकिन 1950–1970 के बीच भौतिक भूगोल और मानव भूगोल के बीच बढ़ती दूरियों ने इसे पर्यावरण के अध्ययन से विमुख कर दिया था। बाद में तंत्र विश्लेषण और पारिस्थितिकीय उपागम के बढ़ते महत्व को भूगोल में तेजी से स्वीकृति मिली और पर्यावरण भूगोल, भौतिक और मानव भूगोल के बीच एक बहुआयामी संश्लेषण के रूप में उभरा।

'परि' का आशय चारों ओर तथा 'आवरण' का आशय परिवेश है। के. हेविट और एफ. के. हरे ने सबसे पहले 'पर्यावरण भूगोल' शब्द का प्रयोग किया था, उन्होंने टिप्पणी की कि आज पर्यावरण भूगोल की मुख्य जरूरतें विचारों और जीवन विज्ञान के परिणामों का गहरा संलयन हैं। वनस्पतियों, जीवों, और मानव जाति सहित सभी सजीवों और उनके साथ संबंधित भौतिक परिसर को पर्यावरण कहतें हैं। वास्तव में, पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, मानव और उसकी विविध गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता हैं। पारिस्थितिकी और भूगोल में यह शब्द अंग्रेजी के environment के पर्याय के रूप में इस्तेमाल होता है। अंग्रेजी शब्द environment स्वयं उपरोक्त पारिस्थितिकी के अर्थ में काफी बाद में प्रयुक्त हुआ और यह शुरूआती दौर में आसपास की सामान्य दशाओं के लिये प्रयुक्त होता था। यह फ्रांसीसी भाषा से उद्भूत है जहाँ यह "state of being environed" (see environ + ment) के अर्थ में प्रयुक्त होता था और इसका पहला ज्ञात प्रयोग कार्लाइल द्वारा जर्मन शब्द Umgebung के अर्थ को फ्रांसीसी में व्यक्त करने के लिये हुआ।

कुछ महत्वपूर्ण परिभाषा

प्रो. जे. स्मिथ (J- smith) के अनुसार, भौतिक, रासायनिक तथा जैविक दशाओं का योग, जो एक जीव द्वारा अनुभव किया जाता है। इसमें जलवायु, मृदा, जल, प्रकाश, निकटवर्ती वनस्पति, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रजातियां सम्मिलित हैं।

डी. एच. डेविड (D- H- David) के अनुसार पर्यावरण का अभिप्राय भूमि या मानव के चारों ओर से घेरे हुए उन सभी भौतिक स्वरूपों से है, जिनमें न केवल वह रहता है। अपितु जिनका प्रभाव उसकी आदतों एवं क्रियाओं पर भी स्पष्ट

Environment में पृथ्वी के भौतिक घटकों को ही पर्यावरण का प्रतिनिधि माना है तथा उनके अनुसार पर्यावरण को प्रभावित करने में मानव एक महत्वपूर्ण कारक है। पर्यावरणीय भूगोल को जीवित एवं गैर–जीवित जीवों एवं प्राकृतिक पर्यावरण के बीच तकनीकी रूप से उन्नत आर्थिक व्यक्ति और विशेष रूप से अस्थाई और

स्थाई ढांचे में उनके प्राकृतिक वातावरण के बीच अंतर्संबंधों के स्थानिक गुणों के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो प्रखण्डों में विभाजित किया जाता है – प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। हालाँकि पूर्ण रूप से प्राकृतिक पर्यावरण (जिसमें मानव हस्तक्षेप बिल्कुल न हुआ हो) या पूर्ण रूपेण मानव निर्मित पर्यावरण (जिसमें सब कुछ मनुष्य निर्मित हो), कहीं नहीं पाए जाते। यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता का द्योतक मात्र है। पारिस्थितिकी और पर्यावरण भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण शब्द का प्रयोग पर्यावास (habitat) के लिये भी होता है। अतः प्राकृतिक या भौतिक भूगोल और मानव भूगोल के मध्य समन्वय स्थापित करने और इनके बहु आयामी संश्लेषण के कारण पर्यावरण भूगोल को एक तीसरी नई पर्यावरण भूगोल का विषयक्षेत्र पृथ्वी के सतह, वायुमंडल और जलमंडल (या अन्य ग्रहों के अनुरूप भागों) में रहने वाले जीवों के कब्जे वाले क्षेत्र को जीवमंडल के रूप में जानते हैं। जीवमंडल व्यापक भू–तंत्र (पारिस्थितिकी तंत्र) है जो पर्यावरण भूगोल के अध्ययन के लिए स्थानिक इकाई के रूप में इसे शामिल किया जाता है।

पर्यावरण भूगोल का मुख्य विषय यह है कि जैविक प्रक्रियाओं और मानव जिम्मेदारियों, मानव–पर्यावरण संबंधों के माध्यम से विभिन्न स्तरों पर प्राकृतिक पर्यावरण के घटकों एवं उनके संबंध का अलग–अलग और साथ–साथ अध्ययन किया जाए।

पर्यावरणीय भूगोल को 5 प्रमुख उपक्षेत्रों में बांटा जा सकता हैः

- पर्यावरण का एक पारितंत्र के रूप में संगठन और उसकी कार्यशीलता,
- मानव पारितंत्रीय संबंध विश्लेषण और पर्यावरणीय अवनयन
- पर्यावरणीय दशाओं और मानव पर्यावरण संबंधों का स्थानिक संदर्भ में अध्ययन
- पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबन्धन से जुड़े स्थानिक पहलू
- भौगोलिक सूचना तंत्र और सुदूर संवेदन तकनीक का पर्यावरणीय अध्ययन में अनुप्रयोग कि दशा और दिशा निर्धारित करना है।

संबंधित प्रश्नशाखा के रूप में भी कुछ विद्वानों द्वारा देखा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. William M- Marsh] Environmental Geography: Science] Land Use] and Earth Systems] John Wiley] 1996
2. Noel Castree] David Demeritt] Diana Liverman] Bruce Rhoads; A Companion to Environmental Geography] John Wiley & Sons] (Google eBook)
3. H- M- SaÛena (2017)- Environmental Geography- Rawat Publications- आइएसबीएन 978&81&316&0848&7-
4. डॉ रतन जोशी, पर्यावरण भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, ISBN 978-93-8979-715-2
5. पर्यावरण भूगोल प्रोफेसर सविंदर सिंह
6. वसुंधरा H-M-सक्सेना
7. भूगोल –डॉक्टर दया शंकर त्रिपाठी
8. मानव जीवन– डॉ. सुमन गुप्ता

❖◆❖